भिन्डी की खेती

- खरीफ एवं जायद दोनों मौसम में सफलता पूर्वक उगाया जा सकता है
- उत्पादन हेतु लम्बे, गर्म एवं आर्द्र मौसम की आवश्यकता
- 35 डिग्री सेल्सियस होने पर अंकुरण तेजी से होता है

प्रजातियाँ

❖ परभनी क्रांति	❖ अर्का अनामिका
❖ वर्षा उपहार	❖ हिसार उन्नत
❖ पूसा ए.- 4	❖ पंजाब पदमनी
❖ अर्का अभय	❖ अर्का अनामिका
❖ आजाद भिन्डी-1	❖ आजाद कृष्णा
❖ आजाद भिन्डी- 4	

खेत की तैयारी

- अच्छे जल निकास वाली दोमट भूमि अच्छी
- खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करके 2-3 जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से
- पाटा लगाकर खेत को समतल तथा भुरभुरा बना लेना चाहिए

बीज की मात्रा एवं बुवाई

- बुवाई मौसम के अनुसार अलग-अलग समय पर की जाती है
- खरीफ में बुवाई जून के दूसरे सप्ताह से जुलाई के मध्य तक
- जायद में 15 फरवरी से 15 मार्च तक

- खरीफ में 10-12 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर तथा जायद में 18-20 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर
- बीज का जमाव 70% से कम हो तो बीज की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए

- बुवाई से पहले बीज शोधन अवश्य करना चाहिए
- बीज को 2 ग्राम थीरम या 2 ग्राम कार्बेन्डाजिम से प्रति किलोग्राम बीज की दर से शोधित करके बुवाई करनी चाहिए

- बुवाई हल के पीछे कूंडो में करनी चाहिए
- खरीफ की बुवाई में लाइन से लाइन की दूरी 45-60 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सेंटीमीटर
- जायद में लाइन से लाइन की दूरी 30 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सेंटीमीटर

खाद एवं उर्वरक

- आखिरी जुताई में लगभग 200-250 कुंतल सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट खाद प्रति हेक्टेयर
- मिट्टी की जाँच के अनुसार ही उर्वरको का प्रयोग करना चाहिए

- 80 किलोग्राम नत्रजन
- 40 किलोग्राम फास्फोरस
- 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर

- नाइट्रोजन की आधी और पोटाश तथा फास्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई से पहले
- नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा को बुवाई के 35-40 दिन बाद टापड्रेसिंग के रूप में

सिचाई

- अंकुरण के समय नमी कम हो तो बुवाई के तुरंत बाद हल्की सिचाई कर देनी चाहिए ताकि बीजो का जमाव अच्छा हो सके
- ग्रीष्मकालीन फसल में सप्ताह में एक बार सिचाई अवश्य करनी चाहिए

- देर से सिचाई करने पर फलियां जल्दी कड़ी हो जाती है
- वर्षा के मौसम में यदि लम्बे समय तक वर्षा ना हो तो आवश्यकतानुसार सिचाई करनी चाहिए
- जल निकास का उचित प्रबंध

खरपतवार नियंत्रण

- पौधों की प्रारंभिक अवस्था में 2-3 निराई-गुड़ाई करनी चाहिए
- वर्षा ऋतु में पौधों पर मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए, जिससे पौधे हवा से गिरते नहीं है

- अंतिम जुताई के बाद भिन्डी की बुवाई से पहले बेसालिन 1.0 किलोग्राम को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टर की दर से मिला देना चाहिए
- खड़ी फसल में एलाक्लोर की 2.5 किलोग्राम या पेंडीमेथलीन 1.5 किलोग्राम सक्रिय अवयव प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना चाहिए

रोग नियंत्रण

- पीला शिरा मोजैक
- पाउडरी मिल्ड्यू
- पत्तियों का धब्बा रोग
- मूल-ग्रंथि
- भिन्डी का उकठा

पीला शिरा मोजैक

- सर्वाधिक हानि पहुँचाने वाली बीमारी है
- पत्ती की संपूर्ण नसें पीली हो जाती हैं
- ज्यादा संक्रमण पर नई पत्तियाँ पीली होकर छोटी रह जाती है
- पौधा भी कम ही बढ़ पाता है

- संक्रमण होने से फूल एवं फलों की संख्या में कमी होती है
- प्रभावित पौधों में फूल व फल कम लगते है, यदि लगते भी हैं तो छोटे एवं कड़े होते है
- बीमारी का विषाणु सफेद मक्खी से फैलता है

नियंत्रण

- रोग रोधी प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए
- रोगी पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दे
- इमिडाक्लोप्रिड या मेटासिस्टाक्स या डायमेथोएट में किसी एक कीटनाशक का छिड़काव

पाउडरी मिल्ड्यू

- रोग फफूंदी के कारण फैलता है
- पत्तियों तथा तने पर छोटे छोटे सफ़ेद धब्बे प्रकट होते है, जो बाद में बढ़ जाते है
- पत्तियों तथा तने पर सफ़ेद पाउडर जैसा पदार्थ जम जाता है
- रोग उग्र होने पर पत्तियां पीली होकर गिर जाती है

नियंत्रण

- कैराथेन 0.06% का घोल बनाकर पौधों पर छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करना चाहिए
- सल्फैक्स 3 किलोग्राम मात्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेर की दर से छिड़काव

पत्तियों का धब्बा रोग

- रोग फफूंदी के कारण फैलता है
- रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियां कुछ ही दिनों बाद सिकुड़कर गिरने लगती है
- रोगी पौधों पर फूल व फल कम लगते है

नियंत्रण

- रोग की प्रारंभिक अवस्था में फाइटोलान का 0.2% घोल का छिड़काव करना चाहिए

मूल-ग्रंथि

- पौधों की वृद्धि कम हो जाती है, तथा जड़ो में गाठें पड जाती है

नियंत्रण

- नीम की खली 25 कुंतल प्रति हैक्टर की दर से मिलाना लाभप्रद होता है

उकठा रोग

- फ्यूजेरियम नामक फफूंदी के कारण होता है
- रोग खरीफ की फसल पर अधिक दिखाई देता है
- इस रोग से पौधे जड़ से ही सूख जाते है

नियंत्रण

- रोग रोधी प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए

कीट नियंत्रण

- जैसिड
- चित्तीदार सूंडी
- माहू कीट

जैसिड

- प्रौढ़ एवं शिशु दोनों ही हानि पहुँचाते हैं
- कीट पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते है
- प्रभावित पत्ती पीले रंग की हो जाती है जो बाद में लाल रंग की होकर झड़ जाती है
- पौधों की बढ़वार रुक जाती है

नियंत्रण

- फसल की शुरू की अवस्था में मेटासिस्टाक्स 25 ई.सी. या साइपरमेथ्रिन का 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए

चित्तीदार सूंडी

- कीट की सूंडी का रंग सफ़ेद होता है जिसके ऊपर काले और भूरे धब्बे पाये जाते है
- सूंडियां तने एवं फलो मे छेद करके क्षति पहुचती है, जिससे तने एवं फल मुरझा कर गिर जाते है

नियंत्रण

- क्लोरपायरीफास 0.05% का 15 दिन के अंतराल पर या सेविन 0.2 % घोल का 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए

माहू कीट

- शिशु एवं प्रौढ़ दोनों पत्तियों से रस चूसते हैं

नियंत्रण

- फसल की शुरू की अवस्था में मेटासिस्टाक्स 25 ई.सी. या साइपरमेथ्रिन 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव

तुडाई एवं उपज

- फलियां जब कोमल हो तभी तोड़ लेनी चाहिए
- पहली तुड़ाई फूल खिलने के 6-7 दिन बाद
- इसके बाद फलियों की तुड़ाई पहली तुड़ाई के 3-4 दिन के अंतर पर की जाती है

- उपज मौसम, स्थान, किस्म और फलियों की तुड़ाई के ऊपर निर्भर करती है
- ग्रीष्मकालीन फसल से लगभग 50-60 कुंतल तथा वर्षाकालीन फसल से 80-100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती है